डॉ. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **कु. महादेवी विश्वनाथ सुंगारे** द्वारा लिखित ''**चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन**'' लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 14 मार्च, 2004

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

डॉ. पांडुरंग पाटील
एम्.ए., पीएच्.डी.
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **कु. महादेवी विश्वनाथ सुंगारे** ने मेरे निर्देशन में "**चित्रा मुद्गल के आवां उपन्यास में चित्रित नारी जीवन**" लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझाओं का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्र के कार्य से मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 14 मार्च, 2004

शोध-निर्देशक

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004.

प्रख्यापन

''**चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन**'' लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है। जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 14 मार्च, 2004

शोध-छात्रा

(कु. महादेवी सुंगारे)

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। आधुनिक युग की देन समझी जानेवाली इस विधा में सर्वाधिक लेखन हुआ है और आज भी हो रहा है। पुरुष लेखकों के साथ महिला लेखिकाओं की भी अधिक रूचि उपन्यास में दिखाई देती हैं साठोत्तरी महिला लेखिकाओं की यह विशेषता रही है कि उन्होने स्वंय नारी होने के कारण नारी को केंद्र में रखकर उपन्यास लेखन किया है और आज भी कर रही हैं। जिससे नारी द्वारा नारी लेखन का एक दौर ही आ गया है। नारी विमर्श के इस दौर में लेखिका चित्रा मुद्गल एक विशेष स्थान रखती है। चित्रा ने साहित्य की हर विधा में अपनी लेखनी चलाई है। वह एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखिका है। अब तक इनके तीन उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। जिसमें प्रधान रूप से नारी विमर्श को प्रस्तुत किया है समकालीन महानगरीय नारी की स्थिति का यथार्थ चित्रण इन्होंने किया है।

✷ प्रेरणा एवं विषय चयन -

हिंदी भाषा तथा साहित्य दोनों के प्रति मुझे विशेष रूचि है। हिंदी साहित्य की गद्य विधा में उपन्यास विधा ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है। जिससे मुझे उपन्यास पढ़ने में विशेष रूचि रही है। स्वाभाविक है कि एक नारी होने के कारण नारी जीवन से जुड़े उपन्यास मुझे अधिक पसंद हैं। अतः मैंने एम्. फिल उपाधि हेतु अनुसंधान के लिए उपन्यास विधा का चयन किया। मेरी रूचि को परखते हुए मुझे एक उपलब्धि के रूप में प्राप्त शोध-निर्देशक आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पी. एस. पाटील जी ने मुझे समकालीन महिला उपन्यासकारों की विशेष जानकारी दी। मैंने अनेक समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यास पढ़े लेकिन चित्रा मुद्गल के सन्. 1999 में प्रकाशित बृहदकाय उपन्यास 'आवां' ने मुझे विशेष प्रभावित किया। महानगरीय नारी जीवन से जुड़े इस उपन्यास में नारी जीवन की अनगिनत समस्याओं की जडों तक पहुँचने का प्रयास किया है। अतः मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध के लिए प्रस्तुत उपन्यास का ही चयन किया तथा आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी के निर्देशन में ''चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन'' शीर्षक निश्चित किया।

प्रस्तुत विषय के अध्ययन के पूर्व मेरे मन में निम्नाकिंत प्रश्न उपस्थित हुए

1. चित्रा मुद्गल का व्यक्तित्व किस प्रकार का होगा ?
2. उनके व्यक्तित्व ने उनके साहित्य को कहाँ तक प्रभावित किया है ?
3. 'आवां' में औपन्यासिक तत्त्वों का निर्वाह किस प्रकार हुआ है ?
4. नारी विमर्श का उपन्यास की दृष्टि से 'आवां' का स्थान ?

5. 'आवां' में चित्रित नारी पात्र किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं ?
6. 'आवां' में नारी समस्याओं को कहाँ तक अभिव्यक्ति मिली है ?

उपर्युक्त प्रश्न मेरे सामने उपस्थित हुए।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजीत कर प्रस्तुत विषय का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है -

✷ प्रथम अध्याय : चित्रा मुद्गल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अध्ययन के लिए उसके रचनाकार के जीवनवृत्त का परिचय आवश्यक होता है। अतः प्रस्तुत अध्याय में लेखिका चित्रा मुद्गल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत अध्याय को तीन विभागों में विभाजित कर क्रमशः जीवन परिचय, व्यक्तित्व के विभिन्न पहलु तथा कृतित्व आदि का विवेचन किया है। जीवन परिचय के अंतर्गत चित्रा का जन्म, बचपन एवं परिवार, शिक्षा, विवाह, लेखन आदि की विस्तृत जानकारी दी है। साथ ही चित्रा के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है। कृतित्व के अंतर्गत उनके समग्र साहित्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए उन्हें अबतक प्राप्त पुरस्कारों की सूची दी है। उपर्युक्त विवेचन के बाद अंत में निष्कर्ष दिया है।

✷ द्वितीय अध्याय : 'आवां' उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन।

प्रस्तुत अध्याय में 'आवां' का शिल्पगत तत्त्वों के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया है।

1. कथावस्तु - इसमें प्रस्तुत उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु देकर उसके गुण एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

2. पात्र एवं चरित्र-चित्रण - पात्र एवं चरित्र-चित्रण तत्त्व के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित पात्र, पात्रों के चरित्र-चत्रिण की पद्धति आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। अंत में निष्कर्ष दर्ज किया है।

3. कथोपकथन - कथोपकथन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त कथोपकथन, कथोपकथन की विधियाँ, तथा उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

4. देशकाल तथा वातावरण - देशकाल तथा वातावरण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित देशकाल तथा वातावरण की विशेषताओं को स्पष्ट किया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

5. उद्देश्य - उद्देश्य का महत्त्व स्पष्ट करते हुए प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य को लेकर विस्तृत चर्चा की है।

अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

6. भाषा-शैली - भाषा-शैली का महत्त्व स्पष्ट करते हुए प्रस्तुत उपन्यास की भाषा एवं शैली की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास के शिल्पगत अध्ययन के बाद अंत में समग्र निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ तृतीय अध्याय : 'आवां' उपन्यास में चित्रित प्रमुख नारी पात्र।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित पात्रों का वर्गीकरण प्रस्तुत करते हुए प्रमुख नारी पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ चतुर्थ अध्याय : 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी के विविध रूप।

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रूपों के बारे में संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करते हुए 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी के पारिवारिक तथा परिवारेतर विविध रूपों का विस्तृत विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ पंचम अध्याय : 'आवां' उपन्यास में चित्रित विविध नारी समस्याएँ।

प्रस्तुत अध्याय में नारी की विभिन्न युगों को नारी की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए 'आवां' उपन्यास में चित्रित विभिन्न नारी समस्याओं को उजागर किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ उपसंहार -

इस प्रकार पाँचों अध्यायों के सूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण के बाद अंत में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार के रूप में दिया है। साथ ही शोध कार्य के दौरान जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं उन्हें भी उपसंहार के बाद प्रस्तुत किया है। 'आवां' उपन्यास को लेकर अनुसंधान की नई दिशाएँ भी प्रस्तुत की है। जिससे आगे चलकर प्रस्तुत उपन्यास पर नये ढंग से अनुसंधान का कार्य हो सकता है।

अंत में संदर्भ-ग्रंथों की सूची तथा परिशिष्ठ प्रस्तुत किया है।

□□□

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के सफल निर्देशन का ही फल है। आपके मार्गदर्शन एवं सहायता के बिना प्रस्तुत शोधकार्य पूरा कर सकना असंभव था। अतः मैं आपकी अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

साथ ही हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के अन्य अध्यापक और श्रद्धेय डॉ. वसंत मोरे जी ने भी यथा समय निर्देशन कर मेरी सहायता की है। अतः उनके प्रति भी आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। साथ ही आदरणीय डॉ. गिरिश काशीद जी ने प्रस्तुत शोधकार्य में शुरू से अंत तक बड़ी सहायता की है। अतः मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मेरे इस शोधकार्य में डॉ. आप्पासाहेब पवार विद्यार्थी भवन का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विद्यार्थी भवन के रेक्टर डॉ. शिर्के जी तथा डॉ. ककडे जी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही डॉ. मेधा नानिवडेकर जी का मेरे शोधकार्य में बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः मैं उनकी ऋणी हूँ।

मेरे जीवन का हर कार्य मेरे परिवारजनों के आशीर्वाद एवं सहयोग के बिना अधूरा है। प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्णत्व में मेरे पिता विश्वनाथ सुंगारे,माता सुशीला एवं बहन सुवर्णा आदि का सहयोग प्रतिपल मिलता रहा। अतः इनकी कृतज्ञता में रहना पसंद करती हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य के दौरान मेरे मित्र परिवार ने भी मेरी बड़ी सहायता की है। इन्नुस शेख, बेबी खिलारे, शोभा जाधव, रेज्जुला, भाग्यश्री, अर्चना, सुप्रिया, सुनंदा, स्नेहल, अनघा, मनिषा आदि का बड़ा योगदान रहा हैं। अतः इन सब के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के वरिष्ठ लेखनिक श्री. साळोखे जी तथा अन्य कर्मचारियों का योगदान भी पर्याप्त रहा है। अतः

इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय का पर्याप्त योगदान प्राप्त हुआ है। वहाँ के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

पुनः एक बार शोध-प्रबंध में मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देनेवालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रस्तुत शोध-प्रबंध विद्वजनों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 14 मार्च, 2004

शोध-छात्रा

(कु. महादेवी सुंगारे)